Issue - 13
Vol. - 1 (April-June, 2016)

ISSN - 2322-0171

ICRJIFR,
IMPACT FACTOR
8.2856

Peer Reviewed & Referred
International Research Journal of
Higher Education
Quarterly Bilingual

A FREE LANCE

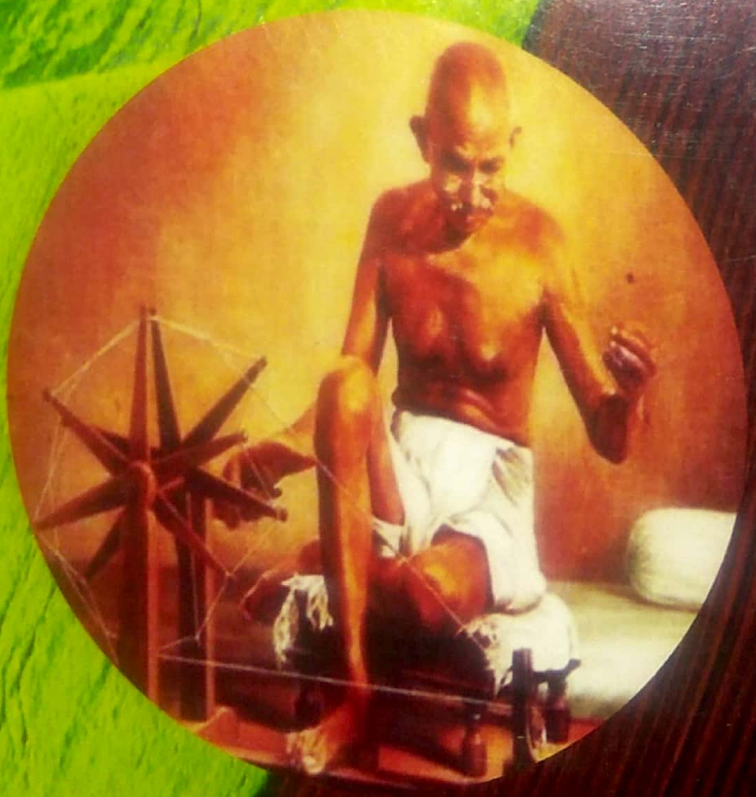

Editor-in-Chief
Dr. Amit Jain

An official publication of
Amit Educational and Social
Welfare Society (Regd.)
Firozabad (U.P.)

Scanned by CamScanner

ISSN - 2322-0171

"संयुक्त एवं एकल परिवार के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. आभा सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं नागौर

प्रस्तावना :

जीवन के प्रथम वर्ष में बालक पूर्ण रूप से अपने माता–पिता एवं समाज के दूसरे सदस्यों पर निर्भर रहता है। किशोर बनते–बनते उसकी शारीरिक, मानसिक एवं सांवेगिक क्षमताएं पूर्ण विकसित हो जाती है। उसे कल्पना लोक एवं यथार्थ की दूनिया का काफी ज्ञान हो जाता है। यह ज्ञान उसे अपने माता–पिता एवं सामाजिक बन्धनों से मुक्ति के लिए प्रेरित करता है। वह स्वतन्त्र होना चाहता है तथा जीवन को अपनी सोच के अनुसार दिशा प्रदान करना चाहता है। उसकी इस प्रवृत्ति को कुछ मनोवैज्ञानिक "मनोवैज्ञानिक जागृति" कहते हैं। जिसका अर्थ है कि बालक स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है व अपने निर्णय स्वयं लेना चाहता है। भविष्य की योजना तथा अपने जीवन को स्वयं संवारना चाहता है।

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल बारह से उन्नीस वर्ष तक रहता है। यह काल भी सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। बालक की कल्पना शक्ति का विकास होता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है। जिस बालक ने धन कमाने का स्वप्न देखा, वह अपने जीवन में धन कमाने में लगता है। जो बालक किशोरावस्था में समाज सुधारक और नेतागिरी के स्वप्न देखते हैं वे आगे चलकर इन बातों में आगे बढ़ते हैं। बच्चे कैसा आचरण करें, इसका निर्णय अनौपचारिक रूप से माता–पिता समाज के बड़े–बूढ़े या स्कूल करते हैं। यह सर्वविदित है कि कोई बालक अथवा व्यक्ति किसी एक विशिष्ट समय में जो कुछ भी होता है वह इसका परिणाम होता है कि जीवन के आरम्भ में वह किस वातावरण में था। उसका पारिवारिक परिवेश कैसा था। परिवार व्यक्ति का प्रथम सामाजिक पर्यावरण है। परिवार का बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार बच्चे के जीवन को संस्कारित करता है। उन पर अमिट छाप डालता है और उनके व्यक्तित्व के निर्माण में योग देता है। परिवार का स्वरूप भिन्न–भिन्न प्रकार का हाता है जिसमें हमने एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार को मुख्य माना है। भारतीय परिवारों के सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का बालकों के व्यक्तित्व, शिक्षा, भावनाओं तथा शिक्षा उपलब्धियों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

औचित्य :

आज भौतिकवादी युग में हर तरफ उच्च आर्थिक संसाधनों की प्राप्ति के लिए प्रतियोगिता होती नजर आती है। ऐसे में अभिभावकों की अपने बच्चों के प्रति अपेक्षाएं बढ़ती जा रही है। वे बच्चों को उनकी रूचि योग्यता के आधार पर विषय का चुनाव न करके अपनी आकांक्षा के आधार पर उनहें विषय का अध्ययन करवाते हैं। परिणामस्वरूप बच्चे अपनी योग्यता से अधिक आकांक्षा रखने लगते है। परिणामस्वरूप जब उनकी उच्च आकांक्षा के अनुरूप नहीं आ पाता तो वे कुण्ठित हो जाते हैं तथा या तो मानसिक दबाव के शिकार हो जाते हैं अथवा आत्महत्या कर लेते हैं योग्यता से अधिक आकांक्षा का ही परिणाम है कि जब माध्यमिक व उच्च माध्यमिक बोर्ड का परीक्षा–परिणाम घोषित होता है तो दूसरे दिन के समाचारों में कई विद्यार्थियों की आत्महत्या की खबरें प्रकाशित होती है।

शोधकर्त्री ने अपनी समस्या के क्षेत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन इस कारण किया है कि किशोरावस्था में मन उलझन भरी कठिन परिस्थितियों के कारण झिझक, संकोच अस्वीकार

Scanned by CamScanner